विधा विशेष का अध्ययन

:- दोहरा अभिशाप -:

विद्यार्थी का नाम -: काळे पूनम नामदेव

रोल नंबर -: 440

वर्ग -: बी. ए. भाग तीन.

कॉलेज का नाम -: कला व वाणिज्य महाविद्यालय वइज.....

Year 2019-20

प्र.२ 'दोहरा अभिशाप' आत्मकथात्मक उपन्यास का उद्देश और समस्या का परिचय लिखिए।

→ प्रत्येक साहित्यकार का अपने कृति के पीछे कोई न कोई उद्देश अवश्य रहता है। अगर उस रचना का कोई भी उद्देश न होतो निरुद्देश रचना साहित्य कहलाने के कोई न कोई उद्देश्य आवश्यक होता है। लेकिन आजकल सभी व्यक्ति अपनी आत्मकथाए लिखते है और अपने सुख दुःख के सामने बाँटते है। क्योंकी छोटी-छोटी घटनाओ से मनुष्य प्रभावित होता है। जिस प्रकार बरे व्यक्तियों की कहानी प्रेरणादायी से मनुष्य का जीवन प्रवाहित होता है। जिस प्रकार बड़े व्यक्तियों की कहानी प्रेणादायी हो सकती है। यह बात पाठक के ऊपर छोड़ देनी चाहिए।

'दोहरा अभिशाप' इस आत्मकथा में ही कौशल्या बैसंत्री ने अपने उद्देश्य को साफ-साफ लिखा है। उनका जन्म सन् 1926 का है। याने स्वतंत्रता के पहले से भारतीय जीवन कैसे था। उस काल में दलितों की स्थिति, स्पृश्य-अस्पृश्य की स्थिति सामाजिक, धार्मिक और आर्थिक परिस्थित. डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर का प्रभाव इन सब को कौसल्या

Page No. Date :

बैसंती ने सिर्फ देखा ही नहीं है, बल्कि प्रत्यक्ष भोगा है।

अन्य दलित महिलाओं से चर्चा के दौरान ही उन्हें लिखने की प्रेरणा मिली। उन्होंने कहा कि आप काफी समय का रवैया कैसे रहा? उस वक्त इनी? गिनी दलित लड़कियाँ पढ़ती थी और सामाजिक कार्यों में बहुत कम पढ़ी लिखी भी। कौशल्या बैसंती ने अपनी माँ की प्रेरणा से प्रभावित होकर विद्यार्थी आंदोलन में सक्रिय हो गई। साथ ही अपने असफल वैवाहिक जीवन को भी व्यक्त किया है। पति ने कभी उनका कदर नहीं की इतना ही नहीं हमेशा गाली-गलौच और मारपीट होती थी। शारीरिक, मानसिक और आर्थिक शोषण आम बात थी। इन सब बातों को उन्होंने अत्यंत संयत शब्दों में रखा है।

आत्मकथा लिखने के अपने महत्वपूर्ण उद्देश्य समाज में पैदा होने से जातीयता के नाम पर जो मानसिक यातनाएँ सहन करनी पड़ी इसका मेरे संवेदनशील मन पर असर पड़ा।

Scanned with CamScanner

Page No. Date :

मैंने अपने अनुभव मैं खुले मन से लिखे हैं। पुरुषप्रधान समाज औरतों का खुलापन बरदाश्त नहीं करता। पति तो इस ताव में रहता है। पुत्र, भाई, पति सब मुझपर नाराज हो सकते हैं। परंतु मुझे भी तो स्वतंत्रता चाहिए कि मैं अपनी बात समाज के सामने रख सकूँ। मेरे जैसे अनुभव और भी महिलाओं को आए होंगे परंतु समाज और परिवार के भय से अपने अनुभव समाज के समाने उजागर करने से डरती और जीवन-भर घुटन में जीती है। समाज की आँखे खोलने के लिए ऐसे अनुभव सामने आने की जरूरत है।

समस्याओं की चर्चा -:

'दोहरा अभिशाप' यह कौसल्या बैसंती की आत्मकथा है। अपनी कथा और व्यथा के। उन्होंने शब्दबद्ध किया है। दलित जीवन की पीड़ाएँ असहनीय और अनुभवदग्ध है। बेहद क्रूर और अमानवीय समाजव्यवस्था में उन्होंने जन्म लिया। भारतीय समाज व्यवस्था में दलित था। अछूत रूप में जन्म लेना और वह भी स्त्री के रूप में यह कितना पीड़ादायक होता है। इसका लेखा-जोखा उन्होंने हमारे सामने रखा है। कौसल्या बैसंती ने अपनी व्यथा को चित्रित करते हुए अन्य नारियों की व्यथा को

colors

Scanned with CamScanner

भी चित्रित किया है।

समाज का स्त्रियों की ओर देखने का दृष्टिकोण, उनपर होनेवाले शारिरीक और मानसिक अत्याचारों का वर्णन किया है।

कौसल्या बैसंत्री की आजी की दूसरी शादी मोडकूजी कोटांगले के साथ हो जाती है। मोडकूजी की भी यह दूसरी शादी थी। मोडकूजी हमेशा आजी को गाली-गलौच करता था, कभी-कभी हाथ भी उठाता। रोज दारु पीकर अपना गुस्सा आजी पर निकालता था। एक दिन उनका लड़का श्रवण आजी को चक्की में डालने का प्रयास किया। इस घटना के कारण आजी अपने बच्चों के साथ घर छोड़कर चली जाती है।

जिस बस्ती में कौसल्या जी रहती थी, वहाँ के कुछ गुंडे और उनकी प्रगति से जलनेवाले रिश्तेदार कुछ न कुछ बहाना बनाकर कौसल्या जी को तंग करते थे। इस तरह की कुछ घटनाओं का वर्णन उन्होंने अपनी आत्मकथा में किया है। जो उस काल की स्त्री की स्थिति को स्पष्ट करता है।

एक बार कौसल्या जी अपनी बुआ की बस्ती से आ रही थी। रास्ते में कुछ गुंडे किस्म के आवारा लड़के जो शादी-शुदा और पीछे छोड़ दिया। उसने पीछे से आकर कौसल्याजी के बाँहो में बस्ती में एक बंगाली लड़का रहने के लिए आया था।

उसने कौसल्या के घरवालों से जान-पहचान बढ़ाई और किसी बहाने से घर आकर कौसल्या का फोटो ले गया। और फिर से दो-तीन बाद चुपचाप रखकर भी चला गया। लेकिन उसने फोटोग्राफर से मिलकर कौसल्या जी के फोटो के साथ-साथ अपनी फोटो बनवाई और रास्ते में आते-जाते कौसल्या को दिखाता रहता। यह देखकर बड़ी हिम्मत के साथ कौसल्या ने उसे चप्पल से पिटा। दो-तीन चप्पलें उसके पीठ पर मारी। यह साहस कौसल्या में बचपन से ही था।

धीरे-धीरे कौसल्या जी की सामाजिक कार्यों रुची बढ़ने लगी। तभी कौसल्या जी का परिचय बाबा साहब के निकट सहयोगी और प्रसिद्ध सामाजिक कार्यकर्ता से हो गया। उन्होंने बहुत प्रेम से कौसल्या जी जानकारी ली। एक दिन वे शाम को कौसल्या जी के घर आ गए। उनके साथ दो-तीन समाज-सेवक और बस्ती के कार्यकर्ता भी थे। उन्हें देखकर माँ खुश हो गयी। हम सब उन्हें देवता समझने लगे थे। और कौसल्या जी का हाथ खिंचने की को कोशिश की। कौसल्या जी ऊपर सिढ़ीयाँ उतरने लगी उन्होंने जोर से उसकी चोटी खींची। इस घटना के बाद कौसल्या ने उन्हें घर से बाहर किया फिर से घर न आने के लिए कहा।

प्र.2 "दोहरा अभिशाप" के आधार पर कौसल्या बैसंत्री का सामाजिक परिचय दीजिए।

→ कौसल्या बैसंत्री का जन्म एक अस्पृश्य परिवार की महार जाति में 08-09-1926 को नागपुर की खलासी लाइन बस्ती में हुआ।

परिवार →

कौसल्या के परिवार में उसकी माँ ने पंद्रह बच्चों को जन्म दिया। पर उनमें से पाँच ही जीवित रहे और ज्यादातर लड़कियाँ ही था। उनकी माँ का नाम भागेरथी और पिता का नाम रामा था। माता-पिता दोनो ही नौकरी करते थे। कौसल्या अपनी माँ से बहुत प्रभावित थी। अपने बच्चों को अच्छी पढ़ाई के साथ-साथ उन्होंने अच्छे संस्कार भी दिए। माँ को समाज के लोगो में आना-जाना और अच्छी बातों को सीखने की इच्छा भी। इसी के साथ अन्याय और अत्याचार को खुलकर विरोध करने की क्षमता भी थी। यह गुण कौसल्या ने माँ से विरासत में पाए थे। माँ-बाप ने अपने बच्चों का लालन-पालन और पोषण करने में कोई नहीं छोड़ी भी। यहाँ खाना-नसीब न हो ऐसी अवस्था में भी आपने संतानो को पढ़ाने की जिद उनके मन में थी।

colors

Scanned with CamScanner

Page No. Date :

अस्पृश्य समाज का अधिवेशन जो होने जा रहा था। उस अधिवेशन में डॉ. आंबेडकर जी आए थे। बहुत नजदीक से उन्होंने आंबेडकर जी को देखा। उन्हें देखकर कौसल्या जी का मन भर आया। अधिवेशन में महिलाओं की उपस्थिती तीस हजार से भी ज्यादा थी। यह देखकर बाबा साहब खुश हुए। अब धीरे-धीरे कौसल्या जी की सामाजिक कार्य में रुचि बढ़ने लगी। बाबा साहब की जयंती पर भाषण देने वह नागपुर से बाहर जाने लगी।

कौसल्या जी. सी. पी. और बरार शेड्यूल कास्ट स्टूडेंट फेडरेशन की ज्वाइंट सेक्रेटरी के रूप में काम करने लगी। सन 1947 में नागपूर में आल इंडिया शेड्यूल कास्ट स्टूडेंट फेडरेशन का अधिवेशन हुआ। उस अधिवेशन में अन्य प्रांतों से अनेक विद्यार्थी आए थे। उनमें से एक थे, देवेंद्र कुमार जिनके साथ आगे चलकर कौसल्या जी की शादी हुई।

अंधश्रद्धा विरोधी कार्य :-

भारतीय लोग ज्यादा तर अंधश्रद्धालु है। खासकर निम्नजाति में और देहातों में इसकी मात्रा ज्यादा दिखाई देती है। दवा-दारू के लिए डाक्टर के पास जाने की अपेक्षा ये लोग भूत-प्रेतों पर ज्यादा विश्वास रखते है। पूजा के लिए पशु-पक्षीयों कि बलि भी दी जाती है। कौसल्या जब भोपाल में रहती थी तब पड़ोस के घर में साप निकला था। उसे उन लोगों ने मार दिया और उसका वह संस्कार किया। इस बात का विरोध करते हुए कहती है। -

Page No. Date :

शिक्षा :-

बचपन से ही कौसल्या को शिक्षा के प्रति लगाव था और इसी कारण वह हर साल प्रत्येक कक्षा में आगे बढ़ती गई। जाई-बाई की स्कूल में तीसरी तक की शिक्षा लेने के बाद उन्होंने मिडे हाईस्कूल में ही उन्होंने पाँचवी के लिए प्रवेश लिया और वहीं से मैट्रिक पास हो गई। कौसल्या भी उनकी बस्ती की पहली लड़की थी जिसने मैट्रिक पास किया हो। आपने इसी समय हिंदी की प्रसिद्ध कहानी उसने कहा था पढ़ी। उन्हें स्कूल में शिक्षा कम और काम ज्यादा करना पड़ता था।

सामाजिक कार्य :-

कौसल्या जी को बचपन से ही सामाजिक कार्यों के प्रति लगाव था। और यह गुण उनकी माँ से उन्हें प्राप्त हुआ था। उनके समाज के विद्यार्थियों की शैक्षणिक समस्याओं के बारे में सोच-विचार और मार्गदर्शन करने के लिए अस्पृश्य विद्यार्थी परिषद बनाई गयी। इसकी उपसचिव कौसल्या जी थीं। नागपुर में सन 1943 में अस्पृश्य विद्यार्थी परिषद का प्रांतीय अधिवेशन हुआ था। उसमें भी कौसल्या जी सक्रिय थीं। बाद में उन्होंने भारत भर के अस्पृश्य विद्यार्थियों से संपर्क करना शुरू किया। परिषद के कारण लोगों से युवकों से मिलना-जुलना होता था। इसी बात को लेकर बस्ती के कुछ आवारा लड़के ताने कसते थे। कौसल्या जी जब नौवीं कक्षा में थीं तब नागपुर में अखिल भारतीय

Page No. Date :

"आप उसे भगा देते, वह जहरीला नहीं था। आपने उसे मारा और फिर उसका सम्मानपूर्वक दाह-संस्कार किया। यह बात मुझे अच्छी नहीं लगी।"

उनके बयान पर कौशल्या जी को आश्चर्य होता है। कौसल्या जी के पड़ोस घर में पूजा थी। लाइन के सभी जान-पहचान की औरतों का हल्दी-कुंकुम के लिए बुलाया था। शाम को सब औरतें चली गई। बाद में कौसल्या को बुलाया गया। उन्होंने, वहां आकर अपनी नाजार नाराजगी स्पष्ट शब्दों में स्पष्ट कर दी।

और कहा, "मुझे हल्दी-कुंकुम के लिए बुलाया था। शाम को सब औरतें चली, मुझे पूजा-पाठ में कोई दिलचस्पी नहीं है। मैं स्वयं ऐसे कार्यक्रमों में नहीं जाती, यही बताने मैं आई हूँ। मैं हल्दी-कुंकुम लेते नहीं आई हूँ। आप ब्राम्हणों को जब अपना स्वार्थ रहता है तब जाति-पाति की याद नहीं रहती"।

इसी तरह कौसल्या बैसंती के जीवन के अलग-अलग पहलू हमारे सामने आ जाते हैं।

colors